संसद के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का संबोधन

नमस्कार। भारत की लोकतांत्रिक आस्था के प्रतीक हमारी संसद के इस नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी, राज्य सभा के उप-सभापति श्री हरिवंश जी, गणमान्य अतिथिगण, देवियों और सज्जनों, मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूं, अभिनन्दन करता हूं।

आज़ादी के अमृतकाल में सम्पूर्ण राष्ट्र आज इस महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक पल का साक्षी बन रहा है। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को साधुवाद देता हूं जिनके दृढ़ संकल्प और प्रेरक मार्गदर्शन से संसद का यह नया भवन ढाई वर्ष से भी कम अवधि में बनकर तैयार हुआ है। मैं उन हजारों श्रमिक भाई-बहनों को नमन करता हूं, जिनकी निरन्तर श्रम साधना और कठिन परिश्रम से यह भागीरथ प्रयास पूरा हुआ है।

कोविड महामारी के कठिन समय में हमारे श्रमवीरों ने अपने कर्त्तव्यों के प्रति अद्भुत समर्पण दिखाया, जिसके कारण राष्ट्र का यह सामूहिक संकल्प सिद्ध हुआ।

जनप्रतिनिधि जनहित और जनता की सेवा भाव के रूप में काम करते हैं। पिछले सात दशकों से संसद के अंदर हमारे विद्वान नेताओं और सांसदों की उत्कृष्ट चर्चा और संवाद से जनता की समस्याओं का समाधान किया गया है। कई महत्वपूर्ण कानून भी बनाए गए, जिनसे लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त हुआ है। इस अवसर पर मैं उन सबका भी आभार व्यक्त करता हूं।

लोक सभा में मेरे पूर्ववर्ती अध्यक्ष ने सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने में समर्पित भाव से योगदान दिया, उनके प्रति मैं साधुवाद व्यक्त करता हूं।

भारत विश्व का प्राचीनतम लोकतंत्र है। सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र की जननी के रूप में हमारी पहचान है।

संसदीय लोकतंत्र की इस यात्रा में हमने सदनों में अच्छी परम्पराएं और परिपाटियां स्थापित की हैं। हमारी निर्वाचन प्रक्रिया के कुशल, पारदर्शी एवं विश्वसनीय प्रबंधन के कारण लोगों का विश्वास लोकतंत्र के प्रति और बढ़ा है। इस अमृतकाल में भारत की प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ी है, सम्मान बढ़ा है।

आज लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ-साथ वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए विश्व भारत की ओर देखता है। भारत की संसद लोकतांत्रिक व्यवस्था का सर्वोच्च केन्द्र है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जनता की बढ़ती भागीदारी इस सत्य को रेखांकित करती है।

लोकतंत्र हमारे इतिहास की बहुमूल्य धरोहर है। लोकतंत्र हमारे वर्तमान की ताकत है और लोकतंत्र हमारे स्वर्णिम भविष्य का आधार है।

हमारी संसद घरेलू और वैश्विक चुनौतियों को अवसर में बदलने का सामर्थ्य रखती है। विविधता में एकता भारत की शक्ति है।

यह शक्ति संसद में भी दृष्टिगत होती है, जहां क्षेत्रीय तथा विचारधाराओं की भिन्नता के बावजूद सांसदगण राष्ट्रहित के विषयों पर एक स्वर में अपनी बात रखते हैं। यही हमारे लोकतंत्र की ताकत है।

भारत की संसद इस प्राचीन राष्ट्र की गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक विरासत की कस्टोडियन है। हमारा वर्तमान संसद भवन भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति तथा संविधान निर्माण से लेकर अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है। इसलिए अपनी इस अनमोल धरोहर को संभालकर रखना भी हमारा दायित्व है।

पिछले वर्षों में पक्ष-विपक्ष के माननीय सदस्यों ने कई अवसरों पर संसद के नए भवन के निर्माण की आवश्यकताओं को महसूस किया था। इसी परिप्रेक्ष्य में राज्य सभा और लोक सभा, दोनों सदनों ने माननीय प्रधानमंत्री जी से संसद का नया भवन बनाने का आग्रह किया था।

मैं प्रधानमंत्री जी का पुन: आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने माननीय सदस्यों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इस आग्रह को तत्काल स्वीकार किया और इतने कम समय में इसको साकार भी कर दिया।

हमारे इतिहास की एक महत्वपूर्ण धरोहर सेंगोल को अध्यक्ष पीठ के समीप स्थापित कर माननीय प्रधानमंत्री जी ने ऐतिहासिक परम्पराओं के सम्मान एवं न्यायपूर्ण एवं निष्पक्ष शासन के प्रति अपने संकल्प को दोहराया है।

यह नव निर्मित भवन हमारी समृद्ध संस्कृति, प्राचीन विरासत एवं आधुनिक आकांक्षाओं का अद्भुत संगम है। नए भवन में माननीय सदस्यगण नई तकनीकी, प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अपनी कार्य कुशलता को बढ़ा पाएंगे। नए वातावरण में नए विचारों का सृजन होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे नए भवन में ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण, ग्रीन टेक्नोलॉजी, पर्यावरण अनुकूलता की विशिष्टता का समागम है।

यह भवन वास्तु, शिल्प, कला व संस्कृति का अद्भुत उदाहरण है। इसमें संपूर्ण भारत की उत्कृष्ट व विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत के दर्शन होंगे। इस भवन में प्रत्येक भारतीय को अपने-अपने राज्य की संस्कृति की झलक भी दिखेगी। इसलिए मेरा माननीय सांसद मित्रों से अनुरोध है कि जब हम संसद के नए भवन में प्रवेश करें तो नए संकल्प के साथ प्रवेश करें।

हम लोकतंत्र की अच्छी परम्पराओं को आगे बढ़ाएं। हम संसदीय अनुशासन, मर्यादा और गरिमा के मानदंड स्थापित करें ताकि विश्व की लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए भारत की लोकतांत्रिक संस्था आदर्श बन सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नए वातावरण में हम सब मिलकर अधिक ऊर्जा के साथ, रचनात्मक व सकारात्मक चर्चा के माध्यम से एक श्रेष्ठ और विकसित भारत का निर्माण कर सकेंगे। आप सबका पुन: बहुत-बहुत अभिनन्दन।

(इति)